

चूहे, दीमक और आधारशिला का शिक्षाशास्त्र

अमित और जयश्री

चूहे आधारशिला के सबसे पुराने साथी रहे हैं। हॉस्टल चलाने वाले इस बात से सहमत होंगे कि हॉस्टल में बच्चों के साथ चूहे और कुत्ते भी बड़े होते रहते हैं। यहाँ पहले बत्तीस बच्चों के साथ यह अक्सर होता था कि सवेरे हॉल में इकट्ठे होते थे और कोई-न-कोई बात किसी बहाने से चल पड़ती थी। ऐसे में ही एक दिन किसी बच्चे ने, शायद चम्पा ने, कहा कि “मूँगफली की गरी में चूहे लगे हैं।” (फसल काटकर जब उसका ढेर लगाया जाता है, तो उस ढेर को गरी कहते हैं)। यह तो बहुत बड़ा नुकसान होगा। शिक्षकों ने भी नहीं बताई यह

बात। “चलो, फिर आज यही काम कर लेते हैं। चूहे निकालते हैं।” सब एकदम जोश में आ गए। ऐसे ही एक झटके में दिन शुरू हो जाता था।

गरी को चूहों से बचाना

सब गरी के पास पहुँच गए। कुछ बच्चों ने हाथ में लकड़ी के डण्डे लिए कि चूहे निकलेंगे तो उन्हें मारेंगे। लेकिन चूहे बाहर कैसे निकलेंगे? बच्चों के शोर से शायद उन्हें अन्देशा हो ही गया होगा कि कुछ होने वाला है। कुछ बच्चों ने लकड़ियाँ गरी के नीचे घुसानी शुरू कर दीं। दिया और कुछ बच्चे, गरी से मूँगफली



चित्र-1: बच्चे दौड़कर गरी के पास पहुँचे और नीचे से चूहों को निकालने लगे।

निकालकर खाने लगे। थोड़ी ही देर में एक-दो चूहे भागते हुए दिखे लेकिन वे कहीं ज़मीन में घुस गए। गरी के नीचे एक दर बना रखा था उन्होंने। किसी ने सुझाया कि दर खोदते हैं और तुरन्त ही कुछ बच्चे लकड़ियों से दर की जगह खोदने लगे। दर को खोदते ही पता चला कि यह तो गरी से बाहर कहीं जा रहा है। वहाँ ज़मीन कड़क थी, इतनी आसानी-से नहीं खुद रही थी तो दो-तीन बच्चे गेंती ले आए।

अब पूरा माहौल एक खुदाई में परिवर्तित हो गया था। एक दर पकड़कर धीरे-धीरे उसे खोदने की बात हुई। यहाँ-वहाँ नहीं खोदना है, नहीं तो पता नहीं चलेगा कि दर कहाँ जा रहे हैं। अब पाँच-छः फीट लम्बी एक नाली दिखने लगी थी जो दो-तीन इंच चौड़ी थी। थोड़ी उड़द की फलियाँ भी उसमें से निकल रही थीं। इसे देखकर सबका जोश और बढ़ गया था। लेकिन मुख्य इनाम जिसका सबको इन्तज़ार था, वह अभी तक नहीं दिखा था - चूहा!

खोदने वाले तो दो-चार बच्चे ही थे लेकिन बाकी सब भी वहीं मण्डरा रहे थे और इसके बारे में बातें कर रहे थे। कुछ अपने अनुभव के आधार पर अनुमान लगा रहे थे कि कहाँ तक गए होंगे ये दर। बहुत-से बच्चों के पास, उनके घर पर चूहों को मारने की कहानियाँ थीं, जो एक-दूसरे को बता रहे थे, अपने दर की

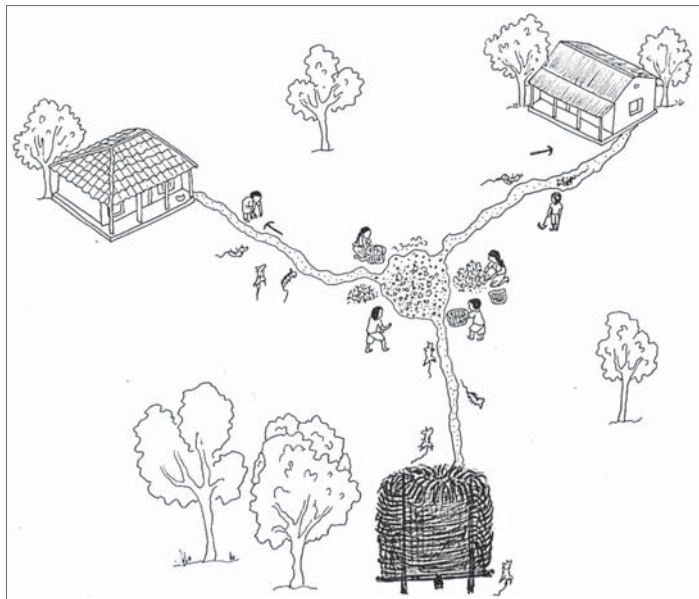
खुदाई पर नज़र रखते हुए। देखते ही देखते दरों की नालियाँ लम्बी होती गईं और उसमें से उड़द निकलती रही। हम लोग तो घर वापिस आ गए क्योंकि इसका कोई अन्त नहीं दिख रहा था।

अचानक कुछ देर बाद शोर मचा और एक-दो बच्चे चिल्लाते हुए घर आए। पता चला कि गरी से जो दर निकला था वो वहाँ से 25-30 फीट की दूरी पर एक कमरेनुमा गड्ढे में परिवर्तित हो गया था जिसमें बहुत-सी उड़द की फलियाँ थीं। और मज़ेदार बात यह थी कि वहाँ से दो दिशाओं में और नालियाँ जा रही थीं। एक मेस की तरफ और दूसरी हमारे घर की तरफ। यह देखकर सबको बहुत मज़ा आया। जहाँ-जहाँ खाने का कुछ मिलता है, वहाँ से चूहों ने, बाहर के रास्ते निकाले हुए थे। चूहों के इस भण्डारगृह से मेस की दूरी करीब 50 फीट होगी। हमारा घर भी वहाँ से 30-40 फीट होगा। इन नालियों के जाल को देखकर स्पष्ट था कि यह एक चूहे का काम नहीं था। बहुत सारे चूहों ने मिलकर इस काम को अंजाम दिया होगा।

‘ऑपरेशन उड़दी’ सफल रहा

चूहों के भण्डारगृह से करीब एक टोकरी उड़द की फली निकली और सात-आठ हट्टे-कट्टे चूहे मारे गए। इस प्रक्रिया से दो काम सामने आए - पहला, आज दिनभर जो हुआ,

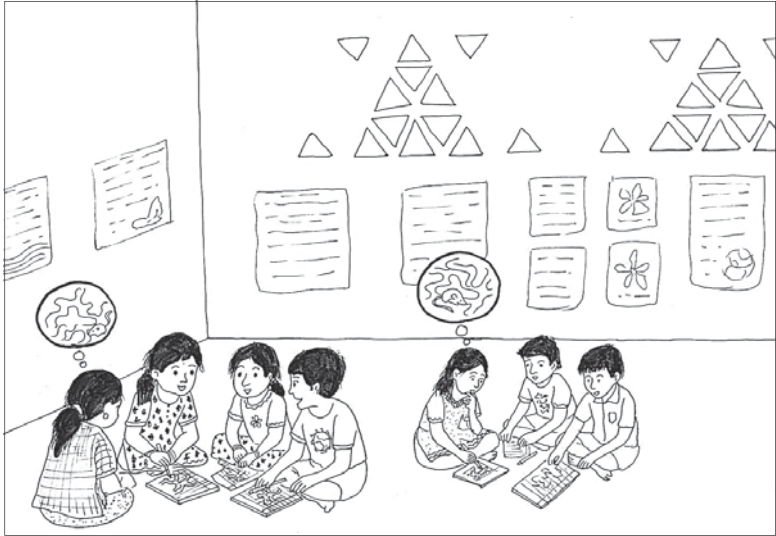
चित्र-2: बच्चों ने चूहों का सारा प्लान ध्वस्त कर दिया और टोकरी भर के उड़द की फली बरामद कर ली! 😊



उसके बारे में लिखना और दूसरा यह कि चूहों द्वारा बनाए गए रास्तों का नक्शा बनाना। लिखना किसी को नहीं आता था। कुछ बड़े बच्चों ने शायद थोड़ा लिखने की कोशिश की। नक्शा बनाना भी किसी को समझ नहीं आ रहा था लेकिन फिर भी सबने बनाने की कोशिश की। किसी तरह कुछ बच्चों ने बनाया भी। लेकिन चूहों के रास्तों का नक्शा, हम सबके दिमागों में छप गया था। नक्शे से सम्बन्धित यह बहुत अच्छी गतिविधि थी। नक्शा बनाने से पहले, उसे देख पाना बहुत अच्छा था।

इस बारे में कई बातें हुईं। सभी ने पहली बार यह देखा और जाना था

कि चूहे इतने सलीके से अपना काम करते हैं। पूरे सालभर के लिए वे खाने का सामान इकट्ठा करके रखते होंगे, इस बात का तो किसी को भी अन्दाज़ा ही नहीं था। हमारे लिए भी यह सब उतना ही नया था जितना बच्चों के लिए। चूहे केवल अकेले-अकेले इधर-उधर भागने वाले और बिल्लियों से डरने वाले जानवर नहीं हैं, इनकी भी कुछ व्यवस्था है जिसे ये जान-बूझकर बनाते हैं। भविष्य के लिए सोचकर कुछ काम करना, यह तो बहुत बुद्धिमानी की बात हो गई। इतना तो बहुत-से इन्सान भी नहीं सोच पाते। हमें जानवरों को देखने का एक अलग नज़रिया मिल गया था



चित्र-3: पहली बार बच्चे नक्शा बनाने की कोशिश कर रहे थे। नक्शे की समझ बनाने के लिए दिमाग को तैयार करने के लिए ऐसी गतिविधियाँ ज़रूरी हैं।

- वे बुद्धिमान होते हैं, वे योजना बनाते हैं और वे समूह में काम करते हैं।

अनुभव से उपजी शिक्षा

इस नई खोज से सब बहुत उत्साहित थे। हमें तो लगा कि हमारा वैकल्पिक स्कूल बस सफल ही हो गया। बच्चों को यह एहसास भी नहीं था कि उन्होंने आज कुछ 'सीखा' है!! हमने तो आज तक ऐसा किसी स्कूल में होते हुए नहीं सुना था। बच्चों के लिए मज़ा था। जैसे पहले बताया था, ऐसा नहीं था कि सारे-के-सारे बच्चे इस गतिविधि में शरीक हों। कुछ देर के बाद सिर्फ कुछ ही बच्चे ऐसे कामों में बचे रहते थे। अन्य बच्चे इधर-उधर

हो लेते थे। यह चुनौती हर समय बनी रहती थी कि सब बच्चे किसी गतिविधि में शामिल हों। शुरुआती दौर में तो ऐसे क्रियाकलापों में शिक्षकों को शामिल रखना भी एक चुनौती थी क्योंकि ऐसे कामों का पढ़ाई-लिखाई से कुछ लेना-देना है, इस बारे में हम लोग खुद भी समझने की ही कोशिश कर रहे थे। शिक्षकों को तो यह सब मज़ाक ही लगता था।

हमें आज के दिन में जो सबसे महत्वपूर्ण लगा, वह था कि बच्चों ने यह तय किया कि क्या करना है। अपनी रुचि से कुछ करने का सोचना और उसे अन्त तक करते रहना, यह बहुत ज़रूरी अनुभव था। जो सोचा था, वह बहुत ज़रूरी काम था – यह

बात महत्वपूर्ण है। आज दिनभर जो हुआ, वह कोई कृत्रिम, पूर्व-निर्धारित गतिविधि नहीं थी। वो जिन्दगी का असली काम था जो सब ने किया। असल में तो वह हमें या शिक्षकों को दिखना चाहिए था। बच्चे अपने परिवेश को बहुत बारीकी-से देखते रहते हैं। तो किसी व्यवस्था में बच्चों को भागीदार बनाने का यह भी एक फायदा है कि आपको बहुत-सी आँखें, कान और हाथ मिल जाते हैं। क्या चल रहा है, वो बारीकी-से पता चल जाएगा। बड़े लोग जानने के बाद भी सोचते रहते हैं कि बताएँ या नहीं, बताने से क्या होगा आदि आदि।

आज की दूसरी बात जो अच्छी लगी, कि ऐसी चीज़ें स्कूल के परिवेश में हो पाईं। ज़रूरी नहीं है कि बच्चे ऐसी बातें क्लास में करें या बड़ों को बताएँ। जब उनसे पूछा गया कि 'आज क्या करना है' तो उन्हें ऐसा

नहीं लगा कि केवल पढ़ाई-लिखाई सम्बन्धित बात ही करनी है। इस अवलोकन को उन्होंने ही साझा किया। मतलब, यह एक अच्छा रिश्ता बन रहा था बच्चों से। पारम्परिक रूप से स्कूल से जुड़ी बातों से परे, जीवन से जुड़ी बातें वहाँ हो पाईं, यह बहुत अहम बात थी। यही तो हमें सही लगता था – शिक्षा का जीवन से जुड़ाव। हालाँकि, इस 'उड़दी दिवस' का औपचारिक शिक्षा से क्या सम्बन्ध बनेगा, यह तो स्पष्ट नहीं था, लेकिन यह कुछ मजेदार था, अच्छा था और काम का था – इतना साफ था। ऐसे और भी काम करते रहना है, यह भी मन में पक्का हो गया था। न भी हो तो क्या। हम शास्त्र के बारे में बहुत ज़्यादा नहीं सोचते थे। बल्कि ज़्यादा शास्त्र सोचने वाले हमारी नज़रों में, उस समय हँसी का पात्र ही होते थे। 😊



इस तरह की एक और घटना है। स्कूल में ट्यूबवेल खोदने का तय हुआ। हमारा हैण्डपम्प बहुत भारी था। पानी निकालने के लिए दो-दो बच्चे कूद-कूद कर उसे हिला पाते थे। गर्मी की छुट्टियाँ आते-आते पानी नीचे चला जाता था। न चाहते हुए भी

ट्यूबवेल खोदने का तय हुआ। ट्यूबवेल खोदने के पहले एक पानी आँकने वाले को बुलाया गया। यह पूरे स्कूल में चर्चा और बातचीत का विषय बन गया। हमारे पास भी, तीन दशकों से आदिवासियों के बीच रहते हुए, इस विषय पर जितनी जानकारी



चित्र-4: हैण्डपम्प बहुत भारी था। दो-दो बच्चे लटककर पानी निकालते थे। इसी से शुरुआती दौर के पेड़ों को पानी देते थे। बच्चों की कड़ी मेहनत से ही आधारशिला में हरियाली हो पाई।

संचित हुई थी, उसे याद किया। बच्चों ने भी जो कुछ सुना था, उसे बताया। कई बच्चों ने पहले भी पानी आँकने वाले को देखा था जब उनके घर या फलिया में किसी ने कुआँ खुदवाया था। कई सारे स्थानीय लोगों से राय-मशवरे के बाद, निवाली (बड़वानी ज़िले की तहसील) में रहने वाले एक व्यक्ति को तय किया गया।

सारा स्कूल उसका बेताबी से इन्तज़ार कर रहा था। वह आया और तुरन्त ही अपने काम में जुट गया। वह नंगे पैर हमारे पूरे कैम्पस में घूमा। चारों तरफ का मुआयना किया। हमसे पानी वाले ने एक नारियल मंगवाया,

और उसे हाथ में लेकर घूमा। नारियल के बाल उतार दिए, केवल बालों की चोटी छोड़ दी। फिर हथेली पर नारियल के गोल हिस्से को कुछ इस तरह से रखा जिससे चोटी थोड़ी ऊपर को उठी थी। इस तरह हथेली पर हाथ रखकर वो पूरे कैम्पस में घूमा। बच्चे भी उसके पीछे भीड़ लगाकर चलने लगे लेकिन उसने बच्चों को दूर भगा दिया।

उस व्यक्ति ने पानी का एक पॉइन्ट सबसे ऊँचे हिस्से पर ढूँढा और दूसरा, सबसे दक्षिणी छोर पर। हमने ऊँचे स्थान को ट्यूबवेल खोदने के लिए चुना क्योंकि वही हमारे और

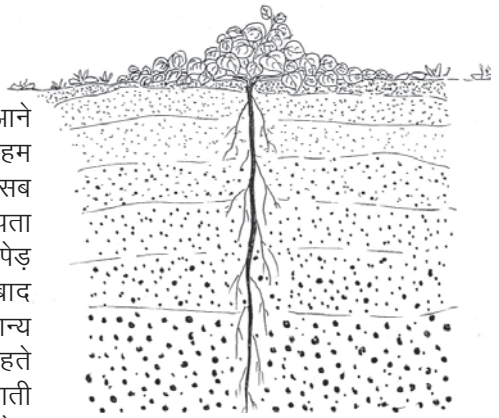
बच्चों के रहने के करीब का स्थान था। सब हैरान थे कि पहाड़ी पर होते हुए भी यहाँ पानी मिल गया। पानी ढूँढने वाले से हमने पूछा कि पानी कैसे ढूँढा तो उसने बताया कि जिस स्थान पर पानी होता है, वहाँ नारियल अपने आप खड़ा हो जाता है। हमें इस बात पर विश्वास नहीं हुआ लेकिन बच्चे और स्थानीय अध्यापक इस बात को ऐसे दोहराते जैसे यह अकाट्य सत्य हो। इसलिए हमने इसकी जाँच करना ज़रूरी समझा। बाद में, बच्चे और हम भी नारियल लेकर घूमे। ज्यादातर का नारियल ऊपर नहीं उठा लेकिन यह ज़रूर पता चला कि हथेली को बहुत हलके से तिरछा करने पर नारियल ऊपर उठ जाता है। शायद वह आदमी आसपास की भौगोलिक स्थिति देखकर भी कुछ अन्दाज़ा लगाता हो, क्या पता।

खैर, ट्यूबवेल खोदने के पहले पानी ढूँढने वाले को बुलाने से यह हुआ कि इस विषय पर बातें होने लगीं। बच्चों ने इस बारे में जो सुना था, वो बताया। हमें अट्ठा गाँव (मध्य प्रदेश के अलीराजपुर ज़िले का एक गाँव) में आदिवासियों के बीच बिताए सालों से जो ज्ञान प्राप्त हुआ था, उसे याद किया। लेकिन कुल मिलाकर कुछ खास नहीं था। जो पानी ढूँढने आया था, हमने उसकी बातचीत बच्चों के साथ करवाने की कोशिश की लेकिन वह कुछ भी बताने में आनाकानी कर रहा था। हमने बच्चों से कहा कि जाओ और अपने गाँव में बुजुर्गों से पूछकर आओ कि इस बारे में उन्हें कुछ पता है क्या। बच्चों को ऐसे काम बहुत अच्छे लगते थे क्योंकि इस बहाने उन्हें घूमने को मिल जाता था।



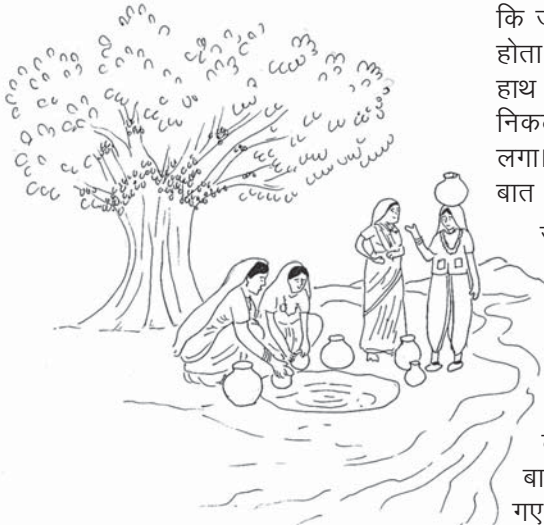
चित्र-5: पारम्परिक ज्ञान के उदाहरण बच्चों के सामने लाना और उसके बारे में बात करना, एक महत्वपूर्ण काम था।

इस बीच, बच्चों से मिलने आने वाले उनके माता-पिता से भी हम लोग इस बारे में पूछते थे। इस सब पूछताछी से हमें कुछ बातें पता चलीं। एक तो यह कि जहाँ बड़े पेड़ होंगे, वहाँ पानी होगा। सुनने के बाद लगा कि हाँ, यह तो काफी सामान्य बात है। पेड़ गर्मी में भी ज़िन्दा रहते हैं तो जड़ें कहीं से तो पानी लाती होंगी। किसी ने कहा कि गूलर के पेड़ के नीचे पानी ज़रूर होता है। हमें भी याद आया कि हमने अलीराजपुर में कई जगह पानी की झिर के पास गूलर के पेड़ देखे थे। एक बच्चे के दादा ने हमारे ही घर के पास एक बेल दिखाई जिसे स्थानीय भाषा में वसुनिया कहते हैं। उनका कहना था



चित्र-7: वसुनिया की बेल की जड़ें बहुत गहरे से पानी और पोषक तत्व ऊपर लाती हैं।

कि इसकी जड़ बहुत नीचे जाती है। बाद में हमें पता चला कि इस तरह के पौधों को पम्प प्लांट्स भी कहते हैं। मतलब जो पम्प की तरह बहुत नीचे से पानी व पोषक तत्वों को ऊपर लाते हैं। एक बुजुर्ग ने बताया कि जहाँ दीमक का, पहाड़ जैसा घर होता है, उसके पश्चिम में तीन-चार हाथ पर कुआँ खोदने से पानी निकलता है। यह तो हमें बड़ा सटीक लगा। हमने सोचा कि क्यों न इस बात को जाँचा जाए।



चित्र-6: गूलर के पेड़ के नीचे अक्सर पानी के झरने होते हैं।

सब बच्चों को बड़े हॉल में इकट्ठा किया गया। ज़मीन के अन्दर के पानी के बारे में लोग पेड़-पौधों व अन्य तरीकों द्वारा कैसे पता करते हैं, इस बारे में चर्चा शुरू हुई। जो बातें हमें लोगों ने बताई थीं, उनके बारे में बातें हुईं। बच्चे और शिक्षक बताए गए उदाहरणों के बारे में सोचने लगे। जब उन्हें बताया कि गूलर के पेड़ के नीचे पानी होता है तो एक-दो

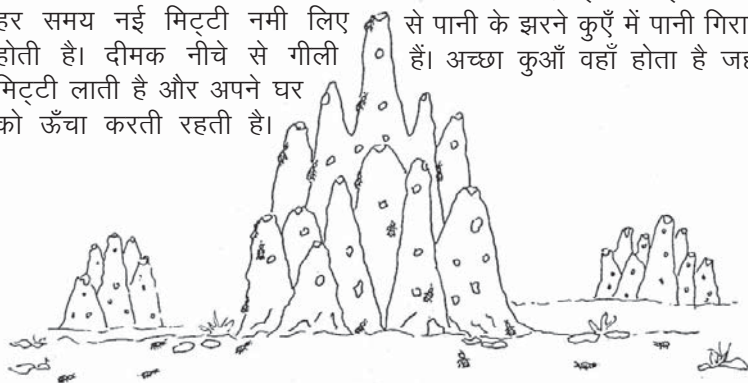
बच्चों को याद आया कि उनके गाँव में भी एक झिर के पास गूलर का पेड़ है। इस तरह बुजुर्गों द्वारा बताए गए उदाहरणों की बच्चे भी पुष्टी कर रहे थे। एक बच्चे के दादा ने बताया था कि जहाँ ज़मीन के नीचे पानी होता है वहाँ ज़मीन थोड़ी गर्म होती है। अगले ही दिन सवेरे जब बच्चे कच्ची सड़क पर दौड़ने गए तो वापस आकर बताया कि किसी स्थान पर उन्हें भी हलकी-सी गर्मी महसूस हुई थी। हमने भी खेत में नंगे पैर चलते हुए इस बात को महसूस किया है। लेकिन ऐसा ज़मीन के पानी के कारण है, यह कहा नहीं जा सकता।

दीमक के घर और पानी की तलाश

फिर बात निकली दीमक के घर यानी दीमक की बाम्बी की। यह किसी ने नहीं सोचा था। फिर सोचकर लगा कि हाँ, ज़रूर इसके नीचे पानी होता होगा, क्योंकि दीमक के घरों में हर समय नई मिट्टी नमी लिए होती है। दीमक नीचे से गीली मिट्टी लाती है और अपने घर को ऊँचा करती रहती है।

दीमक के घर और ज़मीन के नीचे पानी के बीच आपसी सम्बन्ध की बात सही है या नहीं, कैसे जाँचें? किसी ने कहा कि “जहाँ कुएँ हैं, वहाँ जाकर देखते हैं।” “ठीक है, यह किया जा सकता है।” हमने भी खोजने का यह तरीका सोचा हुआ था लेकिन बच्चे भी खोजने के तरीके के बारे में सोच पाएँ, यह ज़रूरी था। फिर बात निकली कि यह ज़रूरी नहीं है कि कुएँ में नीचे पानी हो। उसमें तो बगल से भी झिर फूटती हैं। कुछ लोग बोलते हैं - पानी का धूरा। “क्या तुम्हें मालूम है कि धूरा क्या होता है?” कुछ बड़े बच्चों ने यह शब्द सुन रखा था और उन्हें उसका मतलब भी पता था।

गाँव में लोगों को यह बात मालूम है कि ज़मीन के नीचे पानी के चैनल होते हैं जिन्हें धूरा कहते हैं। कुएँ की दीवारों पर देखा जा सकता है कि अलग-अलग गहराई पर कई दिशाओं से पानी के झरने कुएँ में पानी गिराते हैं। अच्छा कुआँ वहाँ होता है जहाँ



चित्र-8: दीमक का घर जिसके पश्चिम में खोदने से पानी मिल जाता है, ऐसा बताया गया।

उसमें दो-तीन धूरे हों। यह तय हुआ कि तीन-चार समूह में बच्चे बँट जाएँ और दीमक के अलग-अलग घरों को देखें कि वे एक लाइन में आते हैं कि नहीं और क्या यह लाइन किसी कुएँ या पानी के अन्य किसी स्रोत में जाती है। साथ ही, अपनी कॉपी में इनको इंगित करके देखें कि ये एक लाइन में हैं कि नहीं।

हमारे स्कूल की पहाड़ी के पूर्वी हिस्से में ही दीमक का एक बड़ा घर था। एक तो वहीं था जहाँ ट्यूबवेल खुदा हुआ था। एक कुआँ पश्चिम की ओर नीचे तरफ था। ये दो तो याद हैं। दूसरे दो समूह कहाँ गए थे, याद नहीं। कुछ समूहों के साथ शिक्षक भी गए थे क्योंकि हमें ऐसा लगा कि यह

काम थोड़ा पेचीदा है। वैसे शिक्षकों ने भी कभी ऐसा कुछ किया नहीं था लेकिन कभी-कभी किसी अड़चन को सुलझाने में किसी बड़े व्यक्ति का अनुभव काम आ जाता है।

इस काम के लिए जाने से पहले एक गतिविधि करवाई गई। मैदान में कुछ दूरी पर दो बच्चों को आमने-सामने खड़ा कर दिया गया जिन्होंने अपने दोनों हाथों में एक-एक डण्डा पकड़ा हुआ था। एक बच्चे ने एक लकड़ी के पास खड़े होकर, एक आँख बन्द करके दूसरी लकड़ी को देखा। फिर एक बच्चे को कहा कि वह दोनों लकड़ियों के बीच में जाकर खड़ा हो जाए। अब किनारे खड़े बच्चे ने बताया कि बीच वाला बच्चा लाइन



चित्र-9: तीन डण्डों से सीधी रेखा बनाने का अभ्यास।

पर है या लाइन से इधर-उधर। उसे दाएँ-बाएँ सरकाकर दोनों लकड़ियों से बनी लाइन के बीच में लाया गया। इससे दो लकड़ियाँ और बीच वाला बच्चा एक लाइन में आ गए। इस गतिविधि को करने से उन्हें यह पता करने में सहायता मिलेगी कि दूरी पर स्थित चीज़ें एक लाइन में हैं या नहीं। इस गतिविधि को बोर्ड पर रेखांकित करके भी दिखाया गया कि तीन चीज़ों को एक लाइन में लाकर, आगे कैसे बढ़ना है।

हमें जो समझाना था, वो समझा दिया। बच्चे तो जाने के लिए उतावले थे। जब वे उतावले हो जाते हैं तो ज्यादा ध्यान नहीं देते कि क्या बताया जा रहा है। उम्मीद ही की जा सकती है कि कुछ ने तो समझा होगा।

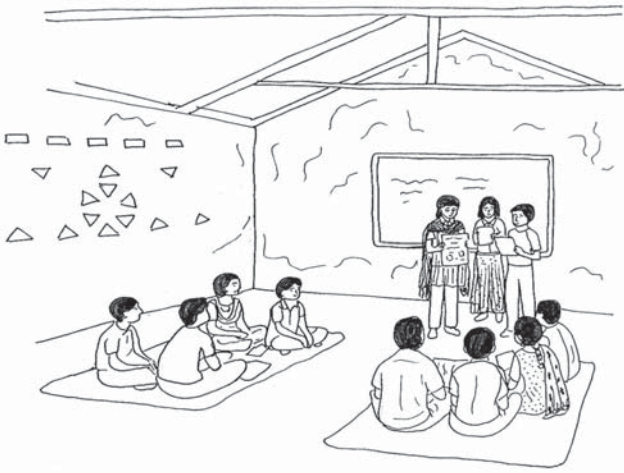
सब चले गए। थोड़ी देर के लिए शान्ति हो गई जिसके लिए हम लोग बहुत बार तरस भी जाते थे। दो-तीन घण्टे बाद बच्चे वापिस आ गए।

सब हॉल में इकट्ठे हुए और बातचीत शुरू हुई। कुछ समूहों के बच्चे काफी उत्साहित थे और कुछ के चुपचाप पीछे बैठ गए थे। स्पष्ट था कि उन्हें इस कार्य में जो मिलने की उम्मीद थी, वो नहीं मिला।

सभी ने अपनी-अपनी रिपोर्ट पेश की। क्या हुआ, कहाँ गए, कौन मिला, उन्होंने क्या कहा आदि आदि। कुछ बच्चों ने कॉपी में चित्र बनाने की कोशिश भी की। सभी को राफ (दीमक का टीला) मिले थे जिनका

स्थान, किसी पास की जगह का उल्लेख करते हुए उन्होंने अपनी कॉपी में इंगित किया था, जैसे रामलाल के घर के पास, हैण्डपम्प के पास आदि। बड़े पेड़ और बाँस के झुरमुट को भी दर्शाया गया था। चित्र में हैण्डपम्प और कुएँ थे। बच्चों की कॉपियों में बने चित्र सब देख सकें इसलिए उन्हें बोर्ड पर बनाया गया। एक-दो रेखाचित्रों से स्पष्ट था कि कम-से-कम दो समूह के बच्चों को लाइनें मिल गई थीं। एक समूह ने तो आधारशिला कैम्पस में ही पुराने हैण्डपम्प, दीमक के राफ और नए ट्यूबवेल की जगह की लाइन बना दी थी। दूसरे समूह की लाइन पूर्व वाले राफ से शुरू होती हुई, उत्तर में स्थित खरतिया इलाके की रोड पर बने हैण्डपम्प तक गई। राफ के पश्चिम में भी एक राफ था जो लाइन से थोड़ा बाहर था। हैण्डपम्प के पास एक बाँस का पुराना झुरमुट भी था। श्रीराम के कुएँ पर जाकर सबने देखा कि कुएँ में झिर किस दिशा से निकल रही है। उन झिरों की लाइनों में क्या मिला, यह याद नहीं है।

यह सोचना कि ज़मीन के नीचे पानी के धूरे होंगे जिनमें पानी बह रहा होगा या हम जहाँ बैठे हैं शायद उसके नीचे भी पानी बह रहा होगा, यह सब बहुत रोमांचक और अविश्वसनीय लग रहा था। अधिकतर बच्चों और शिक्षकों की कल्पना भी कुछ नदी की तरह की थी जो ज़मीन



चित्र-10: सभी समूहों के बच्चे जो खोजकर लाए, उसे एक-दूसरे को बताना भी पढ़ाई का अहम हिस्सा था।

के अन्दर बह रही है, लेकिन यह कल्पना सम्भव नहीं लग रही थी।

बाद में, सवेरे दौड़ने के समय रास्ते में एक चढ़ाव देखा जहाँ एक तरफ की पहाड़ी काटी गई थी। यहाँ खेत की मिट्टी के नीचे की सतहें स्पष्ट दिखाई देती हैं। उनमें से एक सतह कंकड़ों से भरी थी। बारिश के मौसम में तो साफ तौर पर उसमें से पानी का रिसाव दिखाई देता है। गाँव की नदी पर जब घूमने गए तो वहाँ भी पहाड़ के बीच से पानी रिसता हुआ दिखा था। कहीं-कहीं इन कच्चे कंकड़ों की परत के नीचे कठोर चट्टान भी दिखाई देती है जिस पर यह पानी ढाल की तरफ बह सकता है। इन भ्रमणों के बाद बच्चों ने अपने गाँवों में भी पहाड़ों के किनारों से पानी के झरने देखने की बातें बताईं।

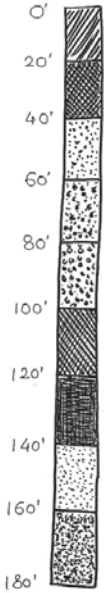
रोजानी माल गाँव पहाड़ पर है। वहाँ ऊपर पानी के झरने कैसे हैं? क्या कोई धूरा ज़मीन के ऊपर आ गया होगा?

इन सबसे बच्चों के दिमाग में धूरे की कल्पना कुछ हद तक स्पष्ट हुई। धरती में पानी है, हम सब बड़ी आसानी-से कह देते हैं लेकिन जब उसके बारे में सोचते हैं, यदि कभी सोचते भी हैं, तो वो नदी या तालाब के रूप में सोचते हैं। इस चर्चा से धरती के ठोस गोले के अन्दर का भी कुछ चित्र उभरता है।

किताबों से परे, ज़मीन से जुड़ा भूगोल

भूगोल की किताबों में स्थानीय भूगोल के बारे में न के बराबर जानकारी होती है। बच्चे पर्वतमालाओं के नाम रटते रहते हैं लेकिन उनका

मिट्टी के नमूने



चित्र-11: जब ट्यूबवेल खुद रहा था तो पूरे समय बच्चे वहाँ बैठे रहे। हर 20 फिट की खुदाई पर जो मिट्टी निकल रही थी, उसे प्लास्टिक की थैलियों में भरकर रखा और एक के नीचे एक को स्टेपल करके लटका दिया। बहुत सालों तक यह स्कूल में लटका था। बच्चों और आने-जाने वालों को बच्चे समझाते थे कि ज़मीन के नीचे तरह-तरह की मिट्टी और पत्थर होते हैं।

गाँव किस पर्वतमाला या भौगोलिक क्षेत्र में आता है, उन्हें कोई नहीं बताता। तीन तरह का मिट्टी का वर्गीकरण बताते हैं लेकिन जब बच्चों से कहा कि अपने खेत से अलग-अलग तरह की मिट्टी ढूँढकर लाओ तो वे आठ तरह की मिट्टी ले आए। स्कूल में आए भूगोल के विशेषज्ञ भी सिर खुजाने लगे।

अधिकतर बातें जो हमारे स्कूली पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती हैं, वे बच्चों के लिए अमूर्त होती हैं। नहीं भी होती तो लगता है कि वे अमूर्त हैं। इन बातों का, बच्चों के दिमाग में एक

चित्र पैदा करना और उनके बारे में नए सिरे से सोचने की प्रक्रिया शुरू करना, हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण था। इसके लिए अपने परिवेश में पाई जाने वाली किसी भी चीज़ या होने वाली घटना से बच्चों को गहराई से जोड़ने के अवसर ढूँढते रहना, हमारा एक पेडागॉजिकल तरीका बन गया।

आदिवासी बच्चों के लिए, शायद सभी के लिए, स्कूल की किताबों के हिन्दी-अँग्रेज़ी शब्द और उनमें दिए गए उदाहरण बिलकुल अपरिचित होते हैं। इस बात का एहसास हमें बार-बार होता रहा। ताजमहल जगह है या इन्सान है, वे यही सोचते रहे। यह तो उनकी सोच से बाहर था कि ताजमहल किसी इमारत का नाम है! इसी तरह, द्विबीजपत्री बीजों का उदाहरण सेम होता है, वे यह रटते रहे, बिना यह जाने कि सेम वही वालोर है जो उनके आँगन में लगी है और जिसकी सब्ज़ी वे बचपन से खाते आए हैं।

इन कामों से यह समझ आया कि सीखना हर समय होता है। हमारा काम था, इन मौकों को पहचानना और उनमें बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करवाना। वैसे कुछ लोग हैं जो बच्चों द्वारा किए जा रहे किसी भी काम या खेल में वयस्कों द्वारा किसी भी तरह के जानबूझकर किए गए प्रयास और हस्तक्षेप को सही नहीं मानते। लेकिन हमें यह पूरी तरह

वाजिब नहीं लगता। यह सही है कि बहुत ज़्यादा रोक-टोक और निर्देश नहीं देना चाहिए लेकिन हमें लगता है कि सीखने के जीवन्त मौके पहचानना शिक्षक के लिए एक सचेत और महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इस दौरान हम यह सोच सकते हैं कि जो चल रहा है, उसमें से कौन-से नए अनुभव बच्चों को दिए जा सकते हैं। जैसे बारिश, सर्दी एवं गर्मी के मौसम हम और बच्चे हर समय अनुभव करते हैं लेकिन इन्हें सीखने के एक मौके में परिवर्तित करने के लिए ज़रूरी है कि हम इन अनुभवों के साथ जुड़ें। यह जुड़ाव अनुभवों के अवलोकन करने से, अवलोकनों को लिखने से, बताने से, इन विषयों के बारे में पढ़ने से और इन अनुभवों के बारे में प्रश्नों पर चर्चा के माध्यम से हो सकता है – जैसे ये मौसम हर साल एक खास क्रम में क्यों आते हैं? ऐसे बहुत-से मौकों का बच्चों ने अन्वेषण किया, जैसे ट्यूबवेल की खुदाई के दौरान हर पाइप के बाद निकलने वाली मिट्टी इकट्ठा करके रखना। इससे

धरती के अन्दर 500 फीट तक क्या है, यह बहुत सालों तक बच्चों को दिखता रहा। साँप पकड़ा तो उसकी चीरफाड़ करना, उसे व अन्य कीड़ों को फॉर्मलीन में रखना। हर मौसम में बहुत-से अवलोकन व प्रयोग करना, खेती में नाप-तौल व हिसाब करना आदि।

इस तरह के कामों से एक महत्वपूर्ण मूल्य जो स्थापित होता है, कि ज्ञान केवल किताबों में नहीं होता। वह बुजुर्गों के पास, आम लोगों के पास भी होता है। और बहुत-सी बातें जो ‘अनपढ़’ गाँववालों को मालूम हैं, वो हमारी किताबों में भी नहीं लिखी हैं। बाद तक यह बात हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण बनी रही कि आदिवासी बच्चों के मन में यह स्थापित कर सकें कि गरीब और पिछड़े कहे जाने वाले आदिवासियों के पास भी महत्वपूर्ण ज्ञान होता है।

चलो, इस बार चूहों और दीमक से मूल्य शिक्षा तक की बात यहीं खत्म करते हैं।

अमित और जयश्री: लगभग तीन दशकों से पश्चिम मध्य प्रदेश में भील, भीलाला, बारैला आदिवासियों के बीच में रह रहे हैं। साथ ही, खेडूत मज़दूर चेतना संगठ, नर्मदा बचाओ आन्दोलन व पश्चिम भारत प्रवासी मज़दूर संघ के साथ-साथ आदिवासियों के अन्य संघर्षों के साथ भी खड़े हैं। 1998 से आदिवासी बच्चों व युवाओं की शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं।

सभी चित्र: भाग्यश्री: प्रकृति प्रेमी, शिक्षा कर्मी, स्वतंत्र चित्रकार और फोटोग्राफर हैं। रियाज़ अकैडमी ऑफ़ इलस्ट्रेंट्स, भोपाल से इलस्ट्रेशन का कोर्स किया है। एकलव्य संस्था में कुछ वर्षों तक काम करने के बाद, वे इन दिनों अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, खरगोन, मद्रास में रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। उनकी कला और काम, बच्चों की कल्पनाओं से प्रेरित हैं और ज़मीन से जुड़ी कहानियाँ कहने की कोशिश करते हैं।